Name - Rohit verma BAMS 2nd Prof (Rohit)

राष्ट्रीय एकता एवं समाजसेवा।

प्रारूप

1) प्रस्तावना
2) राष्ट्रीय एकता का महत्व
3) राष्ट्रीय एकता कैसे होगी
4) राष्ट्रीय एकता एवं समाज सेवा में हमारा योगदान
5) राष्ट्रीय एकता में बाधक कारण
6) उपसंहार

① प्रस्तावना → 'राष्ट्रस्य जनानां एकता इति राष्ट्रीय एकता' अर्थात् राष्ट्र (देश) में रहने वाले जनो में एकता होना राष्ट्रीय एकता है। सभी के मतो में समानता तथा भाईचारा होना ही राष्ट्रीय एकता है। सभी परिस्थितीयों में साथ खड़े रहना और देशवासियो का आपस में प्रेम होना राष्ट्रीय एकता है।

② राष्ट्रीय एकता का महत्व → राष्ट्रीय एकता का महत्व इस दृष्टांत से ही ज्ञात हो जाता है, कि हमारा भारत देश राष्ट्रीय एकता की कमी के कारण ही परतंत्र हुआ था। विदेशी आक्रमणकारियो ने राष्ट्रीय एकता को तोड़कर ही हमारे देश को गुलाम बनाया था। एकता में शक्ति होती है, जिस प्रकार हाथ की एक-एक उंगली और अंगुठा सब मिलकर काम करे तो उनमें अद्भूत शक्ति और दृढ़ता आ जाती है, या एक पतली लकड़ी को तोड़ना सरल होता है एक-एक करके तो अनन्त लकड़ीयो को तोड़ा जा सकता है, परन्तु जब वे सब एक साथ हो तो

उन्हे तोड़ना बहुत कठिन हो जाता है, ठीक उसी प्रकार राष्ट्रीय एकता से राष्ट्र शक्तिशाली बनता है। इसके महत्व को जानना हो तो सिर्फ इसकी अनुपस्थिती के परिणाम देख लो।

3) राष्ट्रीय एकता कैसे होगी → राष्ट्रीय एकता अचानक से नही प्राप्त होगी, यह एक लंबी प्रक्रिया है और कई चरणो में प्राप्त होगी। सबसे पहले बच्चो तथा युवाओं को राष्ट्रीय एकता का महत्व बताया जाना चाहिए। उनमें अच्छे संस्कार तथा भाईचारा होनी चाहिए, इसके लिए शिक्षा व्यवस्था तथा माता-पिता को प्रयत्न करना चाहिए। राष्ट्रीय एकता में जो बाधक कारण है जैसे- जातिवाद, क्षेत्रवाद, धार्मिक भिन्नता, अशिक्षा आदि का निवारण करना होगा।

5) राष्ट्रीय एकता एवं समाजसेवा में हमारा योगदान → इस राष्ट्र के लिए हमें कुछ न कुछ तो हमारी ओर से योगदान करना ही चाहिए आखिर हमारी जन्मभूमि का ऋण है हमपर, यह तो नितांत हमारा परम कर्त्तव्य है कि इस देश की एकता अखण्डता को हम बनाए रखे, हमें अपने परिजनो, मित्रो, तथा सहपाठियो को और छोटे बच्चो को अवश्य ही राष्ट्रीय एकता का महत्व समझाना चाहिए तथा उनके मन से क्लेश, ईर्ष्या, द्वेष जैसे भावों को हटाना चाहिए। यह भी हमारा कर्त्तव्य है। समाज में रहने से मनुष्य सामाजिक प्राणी है, अतः समाज सेवा भी राष्ट्र सेवा ही है। यदि हम किसी के

लिए कुछ कर सकते है, तो अवश्य करना चाहिए।
यदि किसी को हमारी ~~सहा~~ सहायता चाहिए तो हमें
अच्छे कर्मो में उसका सहायक बनना चाहिए।

(5) राष्ट्रीय एकता में बाधक कारण → राष्ट्रीय एकता का इतना महत्व है, फिर भी हमें राष्ट्रीय एकता बनाए रखने में अथक प्रयास करना पड़ता है क्योंकि इसमें कुछ बाधक कारण है, जैसे → जातिवाद, भारत में अनेक जातियों के लोग है वे अपने को ऊंचा, दूसरो को नीचा बताते है। इसी प्रकार अलग-अलग धर्म के लोग अपने धर्म को श्रेष्ठ बताते है, इसी प्रकार अमीर-गरीब में अन्तर, शिक्षित-अशिक्षित में अन्तर, पंथ-सम्प्रदाय, वर्ण ये सब राष्ट्रीय एकता में बाधक कारण बन रहे है। यदि सभी शिक्षित हो जाए तो शायद हमारा देश प्रगति कर पाए।

(6) उपसंहार → राष्ट्रीय एकता अर्थात् भाईचारा-प्रेम-मित्रता सम्मान का भाव देशवासियो के हृदय में हो। राष्ट्रीय एकता का महत्व बहुत है इसके बिना देश विकास नही कर सकता।
राष्ट्रीय एकता में बाधक कारणो को दूर करना तथा समाजसेवा हमारा कर्त्तव्य है।
मेरे विचार से सभी को मित्रता का भाव रखना चाहिए। राष्ट्रीय एकता प्राप्त करने बाद हमे विश्व स्तर पर एकता प्राप्त करना चाहिए।